कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

महा महिमा, नारी गरिमा,
द्रौपदी जिनका नाम।
है संथाली जनजाति से,
मुर्मू है उप नाम।।

अमृत महोत्सवी अवसर पर,
बनकर खेवनहार।
राष्ट्र-प्रधान द्रौपदी मुर्मू,
करो प्रणाम स्वीकार।।

महामहिम द्रौपदी मुर्मू विशेषांक

महामहिम के कर्मनिष्ठ जीवन की झलकियाँ

मातृ प्रेम से भरा हृदय है, चरखे का गौरव मन में है।
मंदिर में स्वच्छता, समर्पण, नारी शक्ति प्रेरणा आप है।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 34, अंक 1
जनवरी-मार्च 2023 (विक्रम संवत् 2080)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद
-:सह सम्पादक:-
डॉ. रंजना त्रिपाठी
–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गाँधी रोड, बाँगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता-7
दूरभाष : 2268 0962, 4803 4533

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन लेन, 1 तल्ला
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
संजय रस्तोगी

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- शुभकामना संदेश 2-3
- संपादकीय... सादगी, सरलता... 4
- द्रौपदी मुर्मू का सम्मान : जनजाति... 5
- महानगर की समितियों ने... 6
- राष्ट्रपति बनने के बाद महामहिम... 7
- श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का राष्ट्रपति... 9
- रूको नहीं, झुको नहीं, बस... तपो! 10
- वनभोज 2023 के सुखद संस्मरण 11
- द्रौपदी मुर्मू का राष्ट्रपति होना... 12
- अनुकरणीय 13
- मल्लारपुर में नारी शक्ति दिवस... 14
- प्रीतिलता छात्रावास में मना... 14
- जनजाति महिलाओं की उपलब्धियाँ 15
- नव वर्ष है, नवल पल्लव है 16
- महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू.. 17
- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा स्वाधीनता... 19
- पूर्णत: शाकाहारी है महामहिम... 20
- तेलंगाना के भद्राचलम मंदिर... 21
- माई लार्ड !...जेल में बंद लोग भी... 23
- कविता .... करो प्रणाम स्वीकार 24

ॐ

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम

(पूर्वांचल कल्याण आश्रम)

शुभकामना संदेश

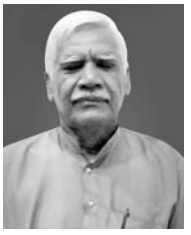

स्नेहलता बैद
संपादक, कल्याण भारती
कल्याण भवन, मानिकतल्ला
कोलकाता - 700006

सादर नमस्कार।

यह जानकर अतीव प्रसन्नता हो रही है कि कल्याण भारती का विशेष अंक प्रकाशित होने जा रहा है जिसमे वर्तमान राष्ट्रपति महामहिम द्रौपदी मुर्मू पर विशेष पठनीय सामग्री का प्रावधान होगा।

आशा करता हूँ कि कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं के अलावा देश के जनजातीय विद्वानों के लिए यह अंक पठनीय एवं संग्रहणीय होगा।

मेरी पहली भेंट उनसे उड़ीसा के क्योंझर में कल्याण आश्रम की खेलकूद प्रतियोगिता में हुई थी। टारगेट पर तीर मारकर उन्होंने प्रतियोगिता का उद्घाटन 1995 में विधायक के नाते किया था। बहुत जुझारू विधायक रही हैं।

कल्याण आश्रम स्थापना दिवस के दिन 26 दिसंबर को भुवनेश्वर में मेरे साथ मंच पर मुख्य अतिथि के नाते झारखंड के राज्यपाल के रूप में पधारीं एवं बालासाहब देशपांडे के बारे में बहुत ही हृदयस्पर्शी वक्तव्य दिया।

मैं इस विशेष अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

कृपा प्रसाद सिंह
पूर्व अ.भा. उपाध्यक्ष, संरक्षक, ग्राम विकास आयाम
अ. भा. वनवासी कल्याण आश्रम, लोहरदगा-835302, भारत

ॐ

RSS राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

शुभकामना संदेश

श्रीमती स्नेहलता बैद
संपादक, कल्याण भारती
कल्याण भवन, मानिकतल्ला
कोलकाता - 700006

यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि कल्याण भारती त्रैमासिक पत्रिका महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू पर विशेषांक प्रकाशित करने जा रही है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के जीवन से संबंधित विशेष तथ्यों का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है,क्योंकि इस पत्रिका द्वारा समाज को भी श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के व्यक्तित्व व कृतित्व तथा राष्ट्रपति पद तक पहुँचने की उनकी यात्रा के बारे में जानने का अवसर प्राप्त होगा। यह एक ईश्वरीय कार्य है। कल्याण भारती पत्रिका आदिवासी समाज से जुड़ी बात समाज के हर लोगों तक पहुँचाने का कार्य कर रही है। स्नेहलता दीदी, आपके एवं सम्पादक मण्डल के परिश्रम से यह पत्रिका सार्थक व सर्वसुन्दर बनती है।

मैं कल्याण भारती के महामहिम द्रौपदी मुर्मू विशेषांक के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

अद्वैत्तचरण दत्त
अखिल भारतीय सह प्रचारक प्रमुख
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
केशव भवन, कोलकाता

संपादकीय...

सादगी, सरलता और समर्पण की जीवंत प्रतीक है महामहिम द्रौपदी मुर्मू

शिक्षिका से राजनेता बनने वाली अनुशासन प्रिय द्रौपदी मुर्मू आज इसलिए प्रेरणादायक नहीं हैं कि वे भारत की 15वीं राष्ट्रपति हैं बल्कि वे इसलिए प्रेरक व्यक्तित्व हैं क्योंकि देश के सर्वोच्च पद पर आसीन होने के बावजूद अत्यन्त सरल व सौम्य हैं। बादाम पहाड़ के जंगल में जन्मी अनवरत संघर्ष एवं निरंतर सक्रियता की मिसाल मुस्कुराती हुई महामहिम द्रौपदी मुर्मू के अंदर की पीड़ा को समझना आसान नहीं है। बचपन दारिद्र्य, अभाव और संघर्षों में बीता, जवानी में विवाह हो गया, दो पुत्र और एक पुत्री की माँ बनी श्रीमती द्रौपदी मुर्मू! पर कालचक्र ने खुशियाँ टिकने न दी। पति व दोनों पुत्र चल बसे किंतु वे कभी विचलित नहीं हुई, अपने कर्तव्य पथ पर अडिग रही और कर्म पथ पर बढ़ती रही। इस संघर्ष और पीड़ा का नतीजा यह हुआ कि उनकी सोच का नजरिया बदल गया। वे वनवासियों को दया का पात्र नहीं मानती बल्कि चाहती हैं कि हर वनवासी उद्यमिता कौशल से परिपूर्ण हो और दुनिया के हर क्षेत्र में अपना नाम गौरवान्वित करे। जनजातीय समुदाय में आपकी पहचान एक शांत, विनम्र किंतु मजबूत इरादों वाली महिला की है। आपका मानना है कि वनवासियों की दासता के कारण हैं - गरीबी, बेरोजगारी, नशा और अंधविश्वास किंतु सबसे मुख्य कारण है निरक्षरता। महामहिम जी बहुत सुलझी हुई महिला है। दूरदर्शी दृष्टि एवं स्पष्ट सोच रखने वाली द्रौपदी जी के चौंकाने वाले भाषण राजनीतिक विश्लेषकों को भी अचंभित कर देते हैं। इनके हौसले पहाड़ों की तरह बुलंद हैं। उनकी सोच और समर्पण का भाव गंगा की तरह पवित्र है। आपकी सबसे बड़ी पूंजी है उद्दाम भावावेग से लहराता संवेदनशील हृदय। संवेदना का धरातल भौतिक जगत के विपरीत भीतर का धरातल है जहाँ संपूर्ण सृष्टि में ईश्वर की उपस्थिति का भाव रहता है। सबके साथ अपनापन, प्रेम, स्नेह एवं संवेदना। यह अपनापन ही द्रौपदी जी का विस्तार है।

जियो और जीने दो सबको, पुन: जागरित यह उद्घोष।
राष्ट्रपति के आचरण में जीव-दया, समता, संतोष।।

हमारी कामना है कि महामहिम द्रौपदी मुर्मू पर केंद्रित यह विशेषांक सभी राष्ट्र भक्तों और संस्कृति प्रेमियों को प्रेरणा प्रदान करे, बहुजन के हित का कारण बने और जनसामान्य में भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति बहुमान विकसित करे। पत्रिका को समृद्ध करने वाले सभी लेखकों का साधुवाद। मैं विशेष रूप से कृतज्ञ हूं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह प्रचारक प्रमुख माननीय अद्वैतचरण दत्त जी की जिनका आग्रह और आदेश ही इस विशेषांक के प्रकाशन का निमित्त बना। वरिष्ठ प्रचारक आदरणीय लक्ष्मीनारायण भाला 'लक्खी दा' के प्रति भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अपनी व्यस्तता के बावजूद कोलकाता महानगर से प्रकाशित 'स्वस्तिका' पत्रिका के आलेखों का अनुवाद कर इस विशेषांक के प्रकाशन को सहज बना दिया। आज देश का अमृत काल है। इस अमृत काल में वनवासी और अरण्य संस्कृति तीव्र गति से आगे बढ़े, इसके लिए हमें निष्ठा के साथ कार्य करना होगा। इति शुभम्।

- स्नेहलता बैद

द्रौपदी मुर्मू का सम्मान : जनजाति का उत्थान

- डॉ. चुनाराम मुर्मू, अध्यक्ष, पू.क.आ. दक्षिण बंग
अनुवादक : शकुन्तला अग्रवाल

21 जुलाई 2022 वह ऐतिहासिक दिन था, जब श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का भारत की पंद्रहवीं राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचन हुआ। श्रीमती मुर्मू का राष्ट्रपति निर्वाचित होना, भारत के इतिहास की एक अप्रत्याशित घटना है। 11 करोड़ जनजाति समाज का एक जगमगाता सितारा, 25 जुलाई को राष्ट्रपति पद की शपथ लेकर रायसीना हिल्स स्थित राष्ट्रपति भवन पहुंची। देश के सबसे पिछड़े वर्ग के व्यक्ति का, देश के सबसे उच्च पद पर आसीन होना वास्तव में ऐतिहासिक घटना ही तो है।

इस घटना ने, देश की चारों दिशाओं में रहने वाले जनजाति समाज के हृदय को आनन्द एवम् उल्लास से भर दिया। बच्चे से लेकर वृद्धावस्था तक का हर एक व्यक्ति अपने-अपने तरीके से उत्सव मना रहा था। कहीं उन्होंने पारंपरिक वाद्ययंत्रों के साथ नाचते-गाते शोभायात्रा निकाली तो कहीं अपने-अपने पारंपरिक वेशभूषा में झूमते गाते नजर आये। कुल मिलाकर देश का समग्र जनजाति समाज आज खुशी का प्रदर्शन कर रहा था। किसी ने कभी सोचा ही नहीं था कि जनजाति समाज का कोई प्रतिनिधि कभी देश का राष्ट्रपति बनेगा। जनजाति समाज का नेतृत्व एक महिला ने किया और देश की द्वितीय महिला राष्ट्रपति बनीं। जनजाति समाज के उत्थान के लिए कार्यरत विभिन्न सामाजिक संगठनों ने महामहिम राष्ट्रपति को अभिनंदन पत्र एवं सोशल मीडिया के माध्यम से अभिनंदन संदेश भेजे। दरअसल यह सब एक अभूतपूर्व आनन्द की अभिव्यक्ति थी। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति समाज का बलिदान इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है। चाहे वह बाबा तिलका माझी, सिद्धू कान्हू, चांद भैरव, फूलो झानो के नेतृत्व में हुई संथाल क्रांति हो या फिर भगवान बिरसा मुंडा का अंग्रेजी शासन के विरुद्ध उलगुलान की हुंकार हो।

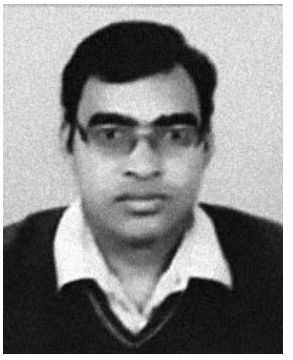

नागालैंड की रानी माँ गाइदिन्ल्यू, गोंडवान की रानी दुर्गावती, केरल का केशरी तलक्कल चंदू, सोमनाथ का रखवाला वेगड़ा भील, भील वीर तांतिया मामा, वीर चक्र बिशोई, वीर बुधू भगत, उरांव वीर जतरा भगत, भील बलिदानी बालक दूदा, आंध्रप्रदेश का अल्लूरी सीताराम राजू एवं असम के खासी समाज का नायक यू तीरथ सिंह का बलिदान अमर है। स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने पर जनजाति समाज से राष्ट्रपति चुना जाना एक सचेत समाज की दूरदर्शिता का परिचायक है। जनजाति समाज से राष्ट्रपति का चयन समग्र समाज के उत्थान के लिये एक मील का पत्थर साबित होगा। जनजाति समाज अपनी संस्कृति तथा आदर्शों से जुड़ा हुआ एक बहुत ही संवेदनशील समाज है।

वर्तमान राष्ट्रपति ने इसी समाज के आदर्शों को लेकर एक लम्बे समय से ओडिशा के मयूरभंज जिले सहित देश के कई प्रान्तों के गांवों में रहने वाले गरीबों के लिए काम किया है। एक सामान्य संथाल जनजाति परिवार से आकर आपने समाज का कार्य करते हुऐ प्रत्यक्ष राजनैतिक पहचान बनाई, यह वास्तव में अकल्पनीय है। श्रीमती मुर्मू झारखंड की राज्यपाल बनीं, इसी पद पर रहते हुए उनको प्रशासनिक कार्य का अनुभव प्राप्त हुआ। हमें आशा है आप देश तथा जनजाति समाज के लिए कुछ उल्लेखनीय कार्य अवश्य करेंगी। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का 'सबका साथ सबका विकास, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' तथा जनजाति समाज की महिला राष्ट्रपति, यह सब महिलाओं को शक्ति प्रदान कर उनको प्रथम पंक्ति में खड़ा करने का अंतरंग प्रयास है, जिसका दूरगामी परिणाम जनजाति समाज के बच्चों को शिक्षा और विकास की ज्योति दिखाएगा। ■

महानगर की समितियों ने उत्साहपूर्वक मनाया श्रीरामनवमी उत्सव

- आरती जयसवाल, कार्यकर्ता, गोवाबागान समिति

राम तत्व है सबके अंदर
आओ फिर से उसे जगाएं।
अंदर बैठे तम को मारें
आओ मिलजुल खुशी मनाएँ।।

भगवान राम अविश्वसनीय मानवीय गुणों से संपन्न हैं। वे ऐसे गुणों के अधिकारी हैं जिनमें अदम्य साहस और पराक्रम हैं। वे सभी के आराध्य हैं। एक सफल जीवन जीने के लिए श्रीराम के जीवन का अनुकरण करना श्रेयस्कर उपाय है।

हमारा हृदय भी राम का बसेरा होना चाहिए। हम सभी दोषों से, विकारों से, द्वेषों से एवं शत्रुता से मुक्त होकर हृदय से सब प्रकार के भेदों को तिलांजलि देकर संपूर्ण जगत को अपनाने की क्षमता रखने वाले बनें। श्रीराम का जीवन हम सबको सदैव प्रेरणा देता रहेगा। इसी भाव को अपने सभी कार्यकर्तावृन्द के मन में स्थापित करने के लिए पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता-हावड़ा महानगर की सभी समितियाँ प्रतिवर्ष रामनवमी उत्सव को अपने वार्षिकोत्सव के रूप में मनाती रही हैं। इस वर्ष भी समितियों का उत्साह द्विगुणित है। प्रत्येक समिति ने रामनवमी उत्सव के कार्यक्रम को वनवासी सेवा और संगठन के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न प्रकार से मनाया। कहीं सुंदरकांड पाठ, कहीं हनुमान चालीसा पाठ तो कहीं अखंड रामचरितमानस पाठ का आयोजन हुआ। ■

राष्ट्रपति बनने के बाद

महामहिम द्रौपदी मुर्मू की पहली मध्यप्रदेश यात्रा

- एक रिपोर्ताज़

- डॉ रंजना त्रिपाठी, कार्यकर्ता अलीपुर समिति

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू दो दिनों की मध्यप्रदेश यात्रा का श्री गणेश 15 नवंबर को शहडोल जिले के ग्राम लालपुर में राज्यस्तरीय जनजाति गौरव दिवस में सहभागिता से हुआ। राष्ट्रपति ने सबसे पहले भगवान बिरसा मुंडा की जन्मजयंती पर उनके चित्र पर माल्यार्पण किया। मध्यप्रदेश के सम्पूर्ण स्वास्थ्य कार्यक्रम योजना पुस्तिका का विमोचन किया। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल, राष्ट्रपति को पेसा अधिनियम नियमावली की प्रथम प्रति सौंपी।

राज्यपाल ने राष्ट्रपति का वीरनमाला जनजातीय दुपट्टा और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने जनजातीय पगड़ी पहनाकर और भील पिथोरा चित्र कलाकृति भेंटकर स्वागत किया।

राष्ट्रपति मुर्मू ने समारोह में कहा कि आज क्लाइमेट चेंज और ग्लोबल वार्मिंग की चुनौतियों को देखते हुए हमें जनजातीय जीवन शैली से शिक्षा लेने की आवश्यकता है। जनजातीय जीवन प्रकृति पर आधारित होता है और वे प्रकृति की रक्षा करते हैं। उनके लिए मानव समाज, वनस्पति और जीव-जंतु समान महत्त्व के हैं। जनजातीय वर्ग व्यक्ति के स्थान पर समूह को, प्रतिस्पर्था के स्थान पर सहकारिता को और विशिष्टता के स्थान पर समानता को अधिक महत्त्व देता है। उनमें स्त्री और पुरुष समान होते हैं, लिंगानुपात बेहतर होता है।

राष्ट्रपति ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटलबिहारी बाजपेयी ने जनजातीय कार्य मंत्रालय का गठन कर जनजातीय वर्ग के कल्याण के लिए ऐतिहासिक योगदान दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में यह मंत्रालय जनजातीय वर्ग के समग्र विकास के लिए कार्य कर रहा है। राष्ट्रपति ने कहा कि मध्यप्रदेश में जनजातीय विरासत है। यहाँ डेढ़ करोड़ जनजातीय आबादी निवास करती है। मध्यप्रदेश के जनजातीय नायकों किशोर सिंह, खाज्या नायक, रानी दुर्गावती, रानी फूलकुंवर, सीताराम कुंवर / महुआ कोल, शंकर शाह, रघुनाथ शाह आदि ने न्याय के लिए सर्वस्व बलिदान कर दिया।

राष्ट्रपति ने मध्यप्रदेश के चंबल, मालवा, बुंदेलखंड, महाकौशल क्षेत्रों की सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध करने में जनजातीय समुदाय के योगदान को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि गत सितम्बर माह में ही उन्हें बैगा परंपरा पर मध्यप्रदेश की फिल्म "मांदल के बोल" को पुरस्कार देने का अवसर मिला था।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का 15 नवंबर की शाम राजभवन, भोपाल में नागरिक सम्मान किया गया। आपने अपने सम्मान समारोह में कहा कि मध्यप्रदेश ने प्रगति के क्षेत्र में अनेक आयाम प्राप्त किए हैं। मध्यप्रदेश की विकास यात्रा तेज़ गति से आगे बढ़ेगी और सभी वर्गों तक विकास पहुँचेगा। मध्यप्रदेश का अनेक क्षेत्रों में अमूल्य योगदान है। खाद्यान्न उत्पादन में मध्यप्रदेश आगे है। कृषि क्षेत्र में उत्पादन सहित अन्य कार्यों में चार वर्ष में मध्यप्रदेश ने महत्वपूर्ण वृद्धि और प्रगति की है। इसके लिए महामहिम ने मध्यप्रदेश की जनता को बधाई भी दी।

स्वच्छता के क्षेत्र में अतुलनीय सफलता के लिए भी मध्यप्रदेश की जनता की राष्ट्रपति महोदया ने सराहना की। महामहिम ने देश के अन्य प्रांतों को मध्यप्रदेश से उदाहरण लेने के लिए कहा।

राष्ट्रपति जी ने आगे कहा कि मध्यप्रदेश की धरा नर्मदा के जल से सिंचित है। प्रदेश को प्रकृति का वरदान प्राप्त है। यहाँ अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य है। देश में सबसे बड़ा वन क्षेत्र है। अनेक राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्य भी हैं। कूनों में नामीबिया से चीते भी लाए गए हैं, जो लुप्त हो गए थे। रानी दुर्गावती ओर झलकारी बाई की गौरव गाथाएँ सुनी जाती हैं। अहिल्याबाई होल्कर ने काशी के मंदिर का उद्धार करवाया। मध्यप्रदेश सरकार की उपल्ब्धियों की सराहना करते हुए अपने संबोधन में कहा कि इस सरकार ने रानी कमलापति के सम्मान में हबीबगंज रेलवे स्टेशन का नामकरण भी किया है। मध्यप्रदेश की वीरप्रसवा धरती से जुड़े कालिदास, तानसेन और उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को स्मरण किया। आपने याद दिलाया कि उज्जैन में सिंहस्थ होता है। ग्वालियर, मैहर और खजुराहो में उत्सव होते हैं। मध्यप्रदेश की धरती से जुड़ी हुई विभूतियों में डॉ अम्बेडकर, डॉ शंकरदयाल शर्मा और अटल जी को याद करते हुए राष्ट्रपति ने उपलब्धियों के लिए बधाई देते हुए सभी प्रदेशवासियों के विकास की कामना की।

सम्मान समारोह में राष्ट्रपति ने 417 करोड़ 57 लाख रुपए लागत की रातापानी - औबेदुल्लागंज - इटारसी फोर लेन परियोजना (एनएच-46) और 300 करोड़ रूपए की लागत की रक्षामंत्रालय के ग्वालियर स्थित रक्षा अनुसंधान एवं विकास संस्थान में मेक्सिमम् माइक्रोबाइल कंटेंन्मेंट लेबोरेट्री (बीएसएल 4) का भी वर्चुअल शिलान्यास किया।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 10 नवम्बर को भोपाल में स्वयं सहायता समूह सम्मेलन में कहा कि प्रदेश में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का अभूतपूर्व कार्य हुआ है। राष्ट्रपति ने कहा कि आत्मनिर्भर और विकसित भारत बनाने में महिला शक्ति की अधिक से अधिक भागेदारी जरूरी है। हमें ऐसा वातावरण तैयार करना है जिससे सभी वर्ग की बेटियाँ निर्भीक और स्वतंत्र महसूस करें और अपनी प्रतिभा का भरपूर उपयोग कर सकें। सभी महिलाएँ एक दूसरे को प्रेरित करें और एकजुट होकर विकास के रास्ते आगे बढ़ें। ■

श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का राष्ट्रपति पद तक पहुँचना:

गौरवशाली भारत के उज्ज्वल भविष्य का संकेत है

- अद्वैत्तचरण दत्त , अ.भा. सह
प्रचारक प्रमुख राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था कि धैर्य, पवित्रता, अध्ययन इन तीनों गुणों का एक साथ जहाँ मिलन होता है वहाँ ही समाज और व्यक्ति का उत्थान होता है। प्रबल इच्छा शक्ति और मन के दृढ़संकल्प के फलस्वरूप आज हम श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का उत्थान और उनका सर्वोच्च पद पर आसीन होना देख रहे हैं। वह आज भारत के सर्वोच्च पद महामहिम राष्ट्रपति के पद पर विराजमान हैं। उनकी जीवन शैली मातृभूमि के प्रति कर्तव्य बोध, स्वधर्म, स्वराष्ट्र और स्वदेशी व्रत के माध्यम से वे आज गौरवमय स्थान पर हैं। भारत के उत्थान के साथ ही परम वैभवशाली भारत दिखाई दे रहा है। कारण सामान्य व्यक्ति, गरीब, वंचित और जनजाति समाज का उत्थान एक सबल भारत, एक उज्ज्वल भारत और एक सशक्त भारत का लक्षण है।

पं दीनदयाल उपाध्याय जी कहते थे कि भारत के सभी क्षेत्रों में केवल राजनैतिक क्षेत्र ही नहीं, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक जगत के पुरुष और महिला के समान अधिकार हैं। वे परस्पर मिलकर काम कर रहे हैं। यह भारत की विशेषता है। भारत की नारी, नारी नहीं नारायणी है। द्रौपदी मुर्मू सांथाली समाज की गौरवशाली परम्परा की धारक हैं। स्वामी विवेकानंद ने कहा - जनजाति का उत्थान भारत का उत्थान है। श्रीमती द्रौपदी मुर्मू सर्वोच्च पद पर आसीन हो पाई हैं इससे हमारे देश का आत्मसम्मान और गौरव बढ़ा है।

नव भारत के आलोक वर्तनी वनवासी समाज के शिक्षा, स्वाभिमान, आर्थिक उन्नति एवं सामाजिक सद्भाव की व्यवस्था वनवासी कल्याण आश्रम कर रहा है।

स्वामी विवेकानंदजी ने कहा - "तू भगवान को कहाँ ढूँढ़ता है? वह तो सभी दरिद्र वंचित व पीड़ित निर्बल समाज के व्यक्तियों में नहीं है क्या? पहले उनकी पूजा क्यों नहीं?" विदेशी मिशनरियाँ चर्च को और भारत की मुस्लिम संस्थाओं को आर्थिक लालच व पेट्रो डालर देकर सहायता क्यों कर रही है? उद्देश्य क्या है? एक मात्र उद्देश्य धर्मान्तरण, हिन्दू समाज में धर्मान्तरण के द्वारा विभेद पैदा कर रहा है। धर्मान्तरण नहीं राष्ट्रान्तरण हो रहा है। ग्राम-शहर सर्वत्र कल्याण आश्रम के माध्यम से अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान हो रहा है और अनेक प्रकार की आशाओं को साकार किया जा रहा है। अनेक गुण संपन्ना राष्ट्रपति के द्वारा समाज में भेद विभेद दूर होगा। समृद्ध भारत, एक स्वाभिमानी भारत, एक गौरवशाली भारत देश को जल्द ही देखने को मिलेगा। हम सब की कामना - **तेरा वैभव अमर रहे माँ हम दिन चार रहें न रहें** - शीघ्र ही फलीभूत होगी। ■

रूको नहीं, झुको नहीं, बस... तपो!

- डॉ. राधिका लढा, अ.भा. सह ग्राम विकास प्रमुख

घास-फूस की बनी झोंपड़ी। दो-चार भोजन पकाने के साधन और दो-चार भोजन करने के। न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती थी। गाँव से दूर एक सरकारी विद्यालय था। इस झोपड़ी की बेटी को भी उस विद्यालय में जाने की ललक जगी तो पिताजी ने दाखिला करवा दिया। पांचवी तक पढ़ने के बाद भुवनेश्वर दाखिला हुआ तो छात्रावास में रहना अनिवार्य हो गया। सहज, सरल द्रौपदी के मिलनसार स्वभाव के कारण वह सबकी चहेती बन गई। पिताजी ने पढ़ाई की महत्ता को समझा तो कॉलेज में पढ़ने का अवसर भी मिल गया और फिर मयूरभंज में ही शिक्षक बन गई। तकदीर भी साथ दे रही थी तो फिर कॉलेज में प्राध्यापक की नियुक्ति भी मिल गई। अपनी ही बिरादरी में विवाह होकर ससुराल आई तो जिंदगी भी सरल ही लगने लगी। एक बेटी का जन्म हुआ किंतु जल्द ही वह भगवान को प्यारी हो गई। संतान की मृत्यु से मन अवसाद से घिर गया। कुछ तो समय ने घाव भर दिया और लोगों की सहानूभूति के कारण वह जल्द ही दु:ख से उबर आई। विधाता ने जल्द ही उसकी झोली पुन: भर दी। दो बेटे और एक बेटी की चहल-पहल से आंगन चहक उठा।

कर्मठता और सरल स्वभाव के कारण जब नगर पंचायत के चुनाव का समय आया तो लोगों ने सर्वसम्मति से द्रौपदी को आगे कर दिया। जीत गईं तो पूरे मन से समाज की सेवा में लग गईं। फिर तो हर बार उनका नाम ही सर्वोपरि रहता और वे उड़ीसा राज्य की मंत्री बन गईं। वाणिज्य एवं परिवहन मंत्रालय का स्वतंत्र कार्यभार मिला। चुनावों में जीत-हार चलती रही किंतु एक समय ऐसा भी आया जब उन्हें 2007 में उड़ीसा विधानसभा में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिये **नीलकंठ पुरस्कार** से सम्मानित किया गया।

द्रौपदी मुर्मू समाज के वंचित तबके के लोगों की अस्मिता और अधिकार के लिये हमेशा मुखर रहकर कार्य करती रहीं। किंतु समय बदला। 2010 से 2014 के बीच उनके दोनों युवा बेटों की मृत्यु हो गई। पति यह दु:ख बर्दाश्त न कर सके तो जल्द जी उन्होंने भी इस संसार को अलविदा कह दिया। वह पूरी तरह टूट गई। जीवन में कुछ बचा ही नहीं था। धीरे-धीरे वह डिप्रेशन की बिमारी से घिरने लगी। न किसी से मिलना और न कहीं बाहर जाना। ऐसे में ब्रह्मकुमारी संगठन के लोगों ने

उनसे सम्पर्क किया, नि:सार संसार की सच्चाई से अवगत कराया और साथ ही अनमोल मनुष्य जीवन की महत्ता को समझाया तो धीरे-धीरे उस भयानक अवसाद से उपराम हुईं और अपने आप पर नियंत्रण किया। ज्ञान हुआ। मन को मजबूत किया। एक ओर अध्यात्म से गहरा रिश्ता था तो दूसरी ओर समाजसेवा के कार्य में भी स्वयं को व्यस्त रखती रहीं। 2014 में केन्द्र में जब भाजपा सरकार आई तो द्रौपदी मुर्मु को झारखण्ड का राज्यपाल बनाया गया। राजभवन के कर्मचारियों का दिल तो उन्होंने जीत ही लिया था। राजभवन परिसर में जनजाति स्वतंत्रता सेनानियों की प्रतिमायें भी लगवाईं। राज्य के लगभग हरेक कस्तूरबा छात्रावास-विद्यालयों में वे गईं। वहाँ पढ़ रही बालिकाओं की तकलीफें दूर करते हुए उनमें ऊँचे सपने देखने का जज्बा जगाती रहीं।

और फिर तो वह दिन भी आया जब द्रौपदी मुर्मू मयूरभंज जिले के छोटे से गाँव रायरंगपुर से निकलकर रायसीना हिल्स पर स्थित राष्ट्रपति भवन पहुंच गई। देश ने आश्चर्य से दाँतों तले उँगली दबा ली जब देखा कि गहन वन की वासी देश के सर्वोच्च पद पर सिंहासनारूढ़ हुई हैं। कठिनतम दौर में भी हिम्मत न हारने वाली, कठिन परिश्रम करने वाली द्रौपदी मुर्मू ने भारत की महिलाओं में मूक संदेश भर दिया कि बस! हारो मत। चलते रहो। राह के काँटे भी तुम्हारा हौसला देख नरम पड़ जायेंगे। अग्नि में तप कर ही तो सोना कुन्दन बनता है। इसलिये तपो किंतु झुको नहीं। उत्तुंग शिखर तुम्हें जब निमंत्रण दे तो रूकना नहीं, डरना नहीं। बस बढ़ते जाना, बढ़ते जाना। एक दिन वे शिखर तुम्हारे कदमों में होंगे और तुम उनकी स्वामिनी। ■

वनभोज 2023 के सुखद संस्मरण

- विमल मल्लावत, कोलकाता महानगर सह संगठन मंत्री

पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता-हावड़ा महानगर ने अपने कार्यकर्तावृन्द और उनके परिवार के लिए दिनांक 5 फरवरी 2023 को ऑर्बिट फार्म बारूईपुर में वनभोज आयोजित किया। वनभोज में लगभग 160 कार्यकर्ता और उनके परिवार के सदस्यों ने भाग लिया। प्रात:काल 10 बजे जलपान के पश्चात कार्यकर्ता संजीव खेतान और राजकुमार जी ने सभी आयुवर्ग के लिए मनोरंजक खेल का आयोजन किया। सारे खेल शरीर और मन के साथ संतुलन बनाने वाले थे।सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। दोपहर भोजन के पश्चात बौद्धिकतापूर्ण खेलकूद का आयोजन हुआ। अपराह्न सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से कार्यकर्तावृन्द ने अपनी-अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। सायंकाल चायपान और मधुर स्मृतियों के साथ सभी ने प्रस्थान किया।

द्रौपदी मुर्मू का राष्ट्रपति होना : गहन तात्पर्यपूर्ण घटना

- लेखक : विश्वामित्र
अनुवादक : लक्ष्मीनारायण भाला 'अनिमेष'

द्रौपदी मुर्मू! मात्र कुछ दिनों पूर्व ही उन्होंने भारत की महामहिम राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण की है। अब वे भारत की प्रथम नागरिक हैं। भारत के सामाजिक जीवन में उनका राष्ट्रपति पद पर निर्वाचित होना एक तात्पर्यपूर्ण बात है। यद्यपि वे भारत की द्वितीय महिला राष्ट्रपति हैं परंतु जनजाति समाज से आयी हुई प्रथम महिला राष्ट्रपति हैं। राष्ट्रपति पद को किसी राजनैतिक दृष्टि से देखना अनुचित है फिर भी देश के प्रथम नागरिक के चयन में एनडीए के कार्यकाल में हर बार जो दूरदर्शिता का परिचय दिया गया है उसको हमें स्वीकार करना ही होगा। पहली बार अटल बिहारी वाजपेई के प्रधानमंत्रित्व काल में प्रख्यात वैज्ञानिक एपीजे अब्दुल कलाम, दूसरी बार नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में रामनाथ कोविंद और अब तीसरी बार इसी सरकार द्वारा द्रौपदी मुर्मू का चयन, उल्लेखनीय है। इस चयन प्रक्रिया का प्रभाव भारत के सामाजिक जीवन में गहराई तक पहुंचेगा।

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि विदेशी आक्रमणकारियों ने तलवार के बल पर भारतीयों को इस्लाम स्वीकार करने के लिए बाध्य किया था। वर्तमान में भी उन्हीं विदेशी तत्वों ने भारत को शक्तिहीन करने के उद्देश्य से द्विराष्ट्रवाद के सिद्धांत को अपनाकर भारतवर्ष को खंडित किया। इसके कारण जो विषवृक्ष के बीज बोए गए थे उसी का फल स्वाधीनोत्तर काल में वोट बैंक की राजनीति के रूप में खंडित भारत भोग रहा है। वस्तुत: संख्या लघु समाज के अधिकारों के लिए चिल्लाने से बहुसंख्यक हिंदू समाज वंचित होने की ग्लानि से ग्रस्त होता है जबकि वर्तमान भारत का तथाकथित अल्पसंख्यक समाज कोई अरब से आया हुआ नहीं है अत: उसे भी इसी भारत भूमि के प्रति अपना दायित्व निभाना है। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने एपीजे अब्दुल कलाम को प्रथम नागरिक बना कर यही संदेश देने का प्रयास किया था।

मतांतरित न होकर भारतीय दलित समाज का प्रतिनिधित्व करने वाले रामनाथ कोविंद को भारत का प्रथम नागरिक होने का गौरव प्रदान कराने के बाद भारत के जनजाति समाज का प्रतिनिधित्व करने वाली द्रौपदी मुर्मू को भारत का प्रथम नागरिक होने का गौरव प्रदान करने के पीछे भी वर्तमान सरकार की कुछ ऐसी ही भावना है। मुगलों के आक्रामक रवैये के फलस्वरूप उदारमना भारतीय समाज में प्रतिरक्षात्मक ढंग से जीने की मानसिकता छाई हुई है। वर्तमान समाज में संख्यालघु समाज का तुष्टिकरण करते हुए वोट बैंक की राजनीति करने वाले कुछ तत्वों ने भारतीय समाज की उदार मानसिकता को अपना हथियार बनाया, संघर्ष के इतिहास को पराजय के इतिहास के रूप में प्रस्तुत किया, समाज में विभेद निर्माण कर जाति के नाम पर आपस में लड़वाया। ऐसे सारे षड्यंत्रों को रोकने की दिशा में उठाया गया एक कदम है, द्रौपदी मुर्मू का राष्ट्रपति पद के लिए किया गया चयन और निर्वाचन ।

आयु की दृष्टि से देखें तो द्रौपदी मुर्मू अब तक के पदासीन राष्ट्रपतियों में सबसे कम आयु की तथा स्वाधीन भारत में जन्म लेने वाली प्रथम राष्ट्रपति हैं।

उनका जन्म सन 1958 का है । उन्होंने प्रशासक के रूप में अपनी दक्षता का परिचय उड़ीसा प्रदेश की मंत्री सभा में मंत्री के नाते तथा झारखंड प्रदेश की राज्यपाल के नाते दिया है। विश्व के विशालतम गणतंत्र के रूप में भारत का सर्वोच्च सांविधानिक पद यद्यपि राष्ट्रपति का है परंतु उनके हर सिद्धांत को केंद्रीय मंत्री सभा की स्वीकृति अनिवार्य है, अर्थात इस पद की सफलता अथवा असफलता का दायित्व सामूहिक है, किसी पद पर बैठे हुए एक व्यक्ति का नहीं। और वैसे भी केवल सात-आठ महीने के इनके कार्यकाल का मूल्यांकन करना अप्रासंगिक ही होगा।

भारतीय गणतंत्र में जैसे राष्ट्रपति के किसी निर्णयात्मक सिद्धांत के पीछे मंत्री सभा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है वैसे ही पद की मर्यादा की दृष्टि से राष्ट्रपति का पद सर्वोच्च है। इसी मर्यादा को अधिक महिमामंडित किया है इनके जनजाति होने के परिचय ने। यद्यपि भारत के राष्ट्रपति का परिचय किसी जाति-पांति के आधार पर होना उचित नहीं है, साथ ही किसी राजनीतिक दल की परिधि से ऊपर होना ही वांछनीय है परंतु विगत कई वर्षों से हम गलत तथ्य पढ़ते आ रहे हैं कि भारतीय समाज में हिंदू धर्म ब्राह्मणवादी है और ब्राह्मणों के द्वारा किए गए अत्याचारों की काल्पनिक कथाएँ गढ़ कर समाज व्यवस्था को बदनाम किया गया। हिंदुओं को विभाजित करने के ऐसे षड्यंत्र को राष्ट्रपति के इस परिचय के कारण अंततः विराम लगने की संभावना दिखाई देती है। राजनीतिक क्षेत्र में फैले हुए विषाक्त परिवेश के कारण पदासीन मंत्रियों की मनमानी और निरंकुशता भी हम भारत के लोगों को झेलनी पड़ती है। दलीय राजनीति की स्वार्थपरता और आम समाज की उदासीनता भी कुछ मात्रा में गलत परंपराओं के लिए जिम्मेदार हैं। राष्ट्रपति के पद पर द्रौपदी मुर्मू जैसे व्यक्तित्व का मनोनयन इस बात का संकेत है कि भारतीय समाज अब ग्लानि की पीड़ा से मुक्त होकर स्वाभिमान के साथ अपने सामाजिक परिचय को गौरव प्रदान करेगा। ■

अनुकरणीय

- कुसुम सरावगी, हावड़ा महानगर महिला प्रमुख

● मध्य हावड़ा से श्रीमती उर्मिला जी केसरी ने अपने पुत्र के विवाह के उपलक्ष्य में 11000/- की धनराशि का अनुदान कल्याण आश्रम हेतु दिया। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए उनके समधी श्री गोरख दत्ता गुप्ता जी ने 5100/- धनराशि का अनुदान दिया।

● पिछले साल 2022 में उत्तर हावड़ा महिला समिति की कार्यकर्ता नीना गुप्ता की पुत्री का विवाह था, उन्होंने पुत्री के विवाह के उपलक्ष्य में कल्याण आश्रम के कार्य को ध्यान में रखते हुए एक तालाब के मूल्य की धनराशि भेंट की।

● विष्णु वाटिका महिला समिति बेलुरबाजार की कार्यकर्ता श्रीमती सुनीता बूबना जी के पुत्र का विवाह सम्पन्न हुआ। इस खुशी में उन्होंने कल्याण आश्रम के बच्चों के निमित्त 25000 की धनराशि भेंट की और श्रीमती मधु गर्ग और ऋषि राज गर्ग, उत्तर हावड़ा के कार्यकर्ता हैं, ने अपनी पुत्री के विवाह पर कल्याण आश्रम को 51000 की धनराशि भेंट की। सभी सुधी जनों को बहुत बहुत साधुवाद।

विमल भाव हैं आपके, विमल आपका काज
कृत कार्तिक अनुमोदना, करता सकल समाज।।

कल्याण आश्रम परिवार सभी नव दम्पत्ती के सुखमय जीवन की कामना करता है। ■

मल्लारपुर में नारी शक्ति दिवस का आयोजन

- श्रीमती प्रतिमा मुर्मू, प्रांत महिला प्रमुख, पूर्वांचल कल्याण आश्रम

विगत 7.2.23 को मल्लारपुर छात्रावास में पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा नारी शक्ति दिवस मनाया गया। उक्त कार्यक्रम जनजाति महिला क्रांतिकारी रानी गाइदिन्ल्यू के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में मनाया गया एवं भव्य शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें आदिवासी बहनों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने वाली वनवासी वीरांगनाओं की वेशभूषा धारण करके शोभायात्रा की श्रीवृद्धि की। शंख ध्वनि के साथ कार्यक्रम ने अपने दिव्य रूप को ग्रहण किया। कार्यक्रम में संथाली और उराँव नृत्य प्रस्तुत हुए। भव्य झाँकी में महिलाएँ तीर-धनुष से सज्जित थीं और विभिन्न लोकवाद्य बजा रही थीं। इस कार्यक्रम में कुल 6 ब्लॉक के 65 गाँवों की महिलाएँ उपस्थित थीं, साथ में पद्मश्री से सम्मानित कमली सोरेन भी उपस्थित थीं। कार्यक्रम में वीरभूम जिले की कई गणमान्य महिलाएँ मंच की शोभा बढ़ा रही थीं। सभी ने भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण किया। सहप्रांत छात्रावास प्रमुख सुश्री मालती सोरेन ने अतिथियों को शॉल समर्पित कर सम्मानित किया। शहीद सैनिक राजेश उराँव की माता जी श्रीमती ममता उराँव को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। रानी गाइदिन्ल्यू की शौर्यगाथा का वर्णन हुआ। इस कार्यक्रम में कुल 955 महिलाएँ उपस्थित थीं। कार्यक्रम का समापन वीरभूम जिला की महिला टोली की प्रमुख श्रीमती उखी सोरेन के धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ। इस कार्यक्रम में जनजाति समाज से जुड़े चित्र और साहित्य का भी प्रदर्शन हुआ। कार्यक्रम के संपन्न होने पर जलपान का भी आयोजन हुआ। ■

प्रीतिलता छात्रावास में मना स्वाधीनता का अमृत महोत्सव

- सुश्री मालती सोरेन, सहप्रांत छात्रावास प्रमुख

दक्षिण बंग के सुन्दरवन में गोसाबा स्थित प्रीतिलता छात्रावास में दिनांक 23.1.23 को स्वाधीनता का अमृत महोत्सव 75 दीपों के प्रज्वलन के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में प्रांत महिला प्रमुख पूर्वांचल कल्याण आश्रम श्रीमती प्रतिमा मुर्मू और पद्मश्री से सम्मानित कमली सोरेन भी उपस्थित थीं। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती वीणापाणि दास शर्मा ने अपने प्रेरणादायक विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में स्वतंत्रता संग्राम की महान वीरांगनाओं का स्मरण किया गया। कार्यक्रम के पश्चात लोकनृत्य प्रस्तुत हुआ। कुल 1375 महिलाएँ उपस्थित थीं। ■

जनजाति महिलाओं की उपलब्धियाँ

- लेखक : कौशिक राय । अनुवादक : लक्ष्मीनारायण भाला 'लक्खी दा'

भारत के जनजाति समाज से भारत के राष्ट्र-प्रधान के पद पर पहुंचने वाली पहली महिला होने के नाते द्रौपदी मुर्मू बधाई की पात्र हैं। उनका यह कर्तृत्व हमें दो और महान व्यक्तित्वों का स्मरण दिलाता है, जिनमें एक है संथाली अलचिकी वर्णमाला के निर्माता पंडित रघुनाथ मुर्मू एवं दूसरे प्रख्यात बुद्धिजीवी, प्रबंधकार तथा भाषा-पंडित हरिप्रसाद मुर्मू का। भारतीय ओलंपिक हॉकी में जनजाति गरिमा को बढ़ाया है दिलीप तिर्के तथा इगलास तिर्के जैसे खिलाड़ियों ने। इनके सिवा भी और अनेक जनजाति प्रतिभाएँ हैं जिनसे हम अभी भी अपरिचित हैं।

एशियन खेलकूद में सात प्रकार की स्पर्धाओं से बनी हेप्टाथलन प्रतियोगिता में 29 वर्ष की आयु में ही तीन बार पदक प्राप्त करने वाली पूर्णिमा हैम्ब्रम माननीया द्रौपदी मुर्मू के गांव से ही है। पाठकों के लिए यह जानना जरूरी है कि सात प्रकार की स्पर्धाओं के इस समूह में तीन प्रकार की दौड़, दो प्रकार की कूद और दो प्रकार की फेंक होती है। भारत का नाम इस प्रतियोगिता में रोशन करने वाली पूर्णिमा हैम्ब्रम आगामी एशियन खेलकूद के लिए पंजाब के पटियाला में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है।

उड़ीसा प्रदेश के मयूरभंज जिले में सुदूर अंचल में बसे ग्राम आसाना की यह खिलाड़िन इस समय भारत के क्राड़ांगण का चमकता अंतरराष्ट्रीय सितारा है। कुछ वर्ष पूर्व तक जनजाति क्षेत्र से किसी खिलाड़ी या खिलाड़िन का चमकना इतना आसान नहीं था लेकिन पूर्णिमा ने एक उदाहरण प्रस्तुत कर दिया। जनजाति क्षेत्र की प्रतिभाएँ अब छुप नहीं सकती। पूर्णिमा जिनके साथ विवाह बंधन में बंधी वह अर्जुन टुडू भी फुटबॉल के खिलाड़ी हैं। इन दोनों की क्रीड़ा क्षेत्र की निपुणता ने सभी को चमत्कृत किया है। जनजाति क्षेत्र की और भी एक महिला ने मुंबई के चलचित्र जगत में चलचित्र परिचालक के नाते अपने प्रतिभा की छाप छोड़ी है, जिसका नाम है दिव्या हाँसदा। संथाली समाज किसी समय अत्यधिक उपेक्षित और अवहेलित रहा है, इस बात को चलचित्र के माध्यम से उजागर करने में वे सफल रही है।

झारखंड में साहिबगंज जिले के तालझरी नामक ग्राम में उनका जन्म हुआ। उनके पिता पटना मेडिकल कॉलेज के छात्र थे तथा चिकित्सा शास्त्र की पढ़ाई करने के बाद मिशनरी अस्पताल में चिकित्सक रहे। दिव्या हाँसदा ने कोलकाता के सेंट जेवियर्स कॉलेज तथा सत्यजित राय फिल्म एंड टेलिविजन इंस्टीट्यूट से अपनी पढ़ाई की। बंगाली ब्राह्मण परिवार के एक युवक के साथ दिव्या का विवाह हुआ। दोनों ही इस समय मुंबई के चलचित्र जगत में दृढ़ता के साथ आगे बढ़ रहे हैं। संथाली चेहरे की बनावट और रंग पर होने वाले कटाक्षों की परवाह ना करते हुए दोनो आगे बढ़ रहे हैं।

झारखंड में दुमका जिला के अंतर्गत कुरुवा नामक ग्राम के पंचायत प्रधान के नाते दो बार निर्वाचित हुई है निर्मला पुतुल। इस जनजाति महिला के संथाली

भाषा में रचित दो काव्य संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं। निर्मला के माता पिता सामान्य कृषक हैं तथा ईंट भट्टा भी चलाते हैं। अर्थाभाव के कारण आने वाली कठिनाइयों से जूझते हुए निर्मला अपनी प्रतिभा के सहारे अपने आप को प्रतिष्ठित कर पाई है। सामाजिक कुरीतियों के कारण होने वाले अत्याचारों को भी उसने झेला है। संथाल जनजाति समाज में जन जागरण का संकल्प लेकर वह कार्यरत है। इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय से स्नातक उपाधि प्राप्त करने के साथ निर्मला ने अपने समाज को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वयं का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

जनजातियों के बीच शिक्षा का विस्तार होना यही उनकी उन्नति का प्रमुख कारण है । परिणामस्वरूप साधारण शिक्षार्थियों के जैसे ही जनजाति के शिक्षार्थी महिला पुरुष विविध परीक्षाओं में अपना कर्तृत्व दिखा पा रहे हैं। जनजाति समाज के कई युवक-युवतियाँ आजकल देश में और विदेश जाकर भी बी.टेक, बी.बी.ए, एम.बी.ए आदि विषयों में पारंगत हो रहे हैं। अब केवल आरक्षण के हकदार होने के कारण ही नहीं वरन अपने ज्ञान के सहारे वे आगे बढ़ रहे हैं। यद्यपि कुछ जनजातियों में अभी भी बाल विवाह की प्रथा है फिर भी अपनी शैक्षणिक योग्यता और कौशल के बल पर जनजाति महिलाएं कई क्षेत्रों में आगे बढ़ रही हैं। माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाली प्रथम जनजाति महिला विनीता सोरेन इसका एक उदाहरण है। द्रौपदी मुर्मू का राष्ट्रपति होना, जनजातियों द्वारा परंपरा की आड़ में अपनाई जा रही कुछ कालबाह्य रीति-रिवाजों में बदलाव लाने में सहायक सिद्ध होगा तथा जनजातियों के उत्थान में मददगार होगा इसमें कोई संदेह नहीं है। ■

नव वर्ष है, नवल पल्लव है

- सुरेश चौधरी 'इंदु'

प्राची का अम्बर भी देखो
आज केशरिया घुला है
नव वर्ष है नवल पल्लव है
हृदय नवल पुष्प खिला है।।

हवाएँ मदिर मोहक
मंगल गीत गा रही हैं आज
इस देवभूमि पर देवत्व अमृत
बरसा रही हैं आज।।

नव वर्ष है नवल पल्लव है...

आओ हम सब मिल नूतन
संवत्सर का करें स्वागत
प्रभु विश्व संकट का हो
समापन हैं तेरी शरणागत।।

महि पर पुनः भारत देश को
वही गुरु मान मिला है
नव वर्ष है नवल पल्लव है
हृदय नवल पुष्प खिला है।।

महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का संक्षिप्त जीवन वृत्त

- *संदीप मुरारका, जनजातीय मुद्दों पर लिखने वाले कलमकार, जमशेदपुर*

प्रसिद्ध अमेरिकन लेखक जॉन फ्रैंकलिन (Jon Franklin) लिखते हैं कि Simplicity, carried to an extreme, becomes elegance. अर्थात सादगी, एक चरम पर पहुँच कर, शिष्टता बन जाती है। यह सूक्ति सौ फीसदी यदि किसी पर फिट बैठती है तो वे हैं महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, ओड़िशा।

सौम्य, सरल व निश्छल स्वभाव की श्रीमती द्रौपदी को झारखंड राज्य की पहली महिला राज्यपाल बनने का गौरव प्राप्त हुआ। दिनांक 6 जुलाई 2021 तक झारखंड की राज्यपाल रहते हुए आपने अपनी अमिट छाप छोड़ी।

बादाम पहाड़ के बीहड़ जंगल के अंदर ऊपरबेड़ा गाँव के संथाल परिवार में जन्मीं ट्राइबल लड़की का जीवन कितना संघर्षमय रहा होगा? बचपन अभावों में बीता, जवानी में विवाह हो गया, दो पुत्र और एक पुत्री की माँ बनी द्रौपदी पर कालचक्र ने खुशियाँ टिकने न दी, पति व दोनों पुत्र चल बसे। मुस्कुराती हुई महामहिम द्रौपदी मुर्मू के अंदर की पीड़ा को समझना आसान नहीं है, किन्तु साहसी द्रौपदी विचलित नहीं हुई, अपने कर्तव्य पर अडिग रही और कर्म पथ पर बढ़ती रहीं।

अनवरत संघर्ष व निरन्तर सक्रियता द्रौपदी मुर्मू के जीवन के मूलमंत्र हैं। पारिवारिक गतिरोध के बावजूद वे अपने राजनैतिक व सामाजिक जीवन में लगातार सक्रिय रहीं। समर्पित व अनुशासित कार्यकर्ता द्रौपदी मुर्मू को जब जो जिम्मेदारी मिली, उन्होंने उस दायित्व की पूर्ति के लिए अपना शत प्रतिशत योगदान दिया।

वर्ष 2000 के ओड़िशा विधानसभा निर्वाचन में रायरंगपुर विधानसभा क्षेत्र (सुरक्षित) से भाजपा के सिम्बल पर द्रौपदी मुर्मू ने शानदार जीत दर्ज की। दिनांक 22 फरवरी को सम्पन्न इस चुनाव में 73539 वैध मतदान हुआ, जिसमें उनको 25110 यानि 34.14 % मत प्राप्त हुए और उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी कांग्रेस के लक्ष्मण माझी को 4568 मतों के अन्तर से हराया। भाजपा के लिए इस चुनाव की विशेष बात यह भी रही कि रायरंगपुर विधानसभा क्षेत्र से पहली बार उनके उम्मीदवार ने जीत दर्ज की।

वर्ष 2004 के विधानसभा निर्वाचन में पुनः श्रीमती द्रौपदी मुर्मू (भाजपा) ने जीत दर्ज की, इस बार उनके मतों में और इजाफा हो गया, उन्हें 29295 मत प्राप्त हुए।

श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने अपने पहले विधायक कार्यकाल में ओड़िशा राज्य सरकार के मन्त्री दायित्व का निर्वहन किया, वे 6 मार्च 2000 से 6 अगस्त 2002 तक वाणिज्य और परिवहन विभाग की मन्त्री रहीं, पुनः 6 अगस्त 2002 से 16 मई

2004 तक मत्स्य पालन और पशु संसाधन विकास विभाग की मन्त्री रहीं।

अन्य दायित्व

वर्ष 1997 में द्रौपदी मुर्मू ने रायरंगपुर के पार्षद का चुनाव जीता और वे जिला परिषद की उपाध्यक्ष बनीं। भाजपा में विभिन्न दायित्वों पर रहते हुए उन्होंने संगठन को न केवल मजबूत किया बल्कि जनजातीय समुदाय में पार्टी के उद्देश्यों को पहुँचाने में सफल रहीं। वर्ष 2002 से 2009 तक वे मयूरभंज पूर्व की जिलाध्यक्ष रहीं, पुन: 2009 में एवं 2013 से 10

अप्रैल 2015 तक उन्होंने मयूरभंज जिला में भाजपा का नेतृत्व किया। इसी बीच वर्ष 2006 से 2009 तक भाजपा अनुसूचित जनजाति मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष भी रहीं। वर्ष 2002-09 एवं 2013-15 में वे भाजपा अनुसूचित जनजाति मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य रहीं।

शिक्षिका

वर्ष 1978-79 में भुवनेश्वर के रमादेवी महिला कॉलेज से कला स्नातक द्रौपदी मुर्मू ने रायरंगपुर के श्री अरबिंदो इंटीग्रल एजुकेशन एंड रिसर्च में सहायक शिक्षिका के रुप में कार्य किया।

नौकरी

कैरियर बनाने व पेट की लड़ाई की जद्दोजहद में श्रीमती द्रौपदी को काफी संघर्ष करने पड़े, उन्होंने ओडिशा के सिंचाई एवं ऊर्जा विभाग में कनिष्ठ सहायक के रूप में भी कार्य किया है।

सहायक शिक्षिका से कुलाधिपति तक का सफर तय करने वाली डॉ. द्रौपदी मुर्मू की जीवन गाथा हर महिला व युवा के लिए प्रेरणाप्रद है, किन्तु इसलिए नहीं कि वे झारखंड की पहली जनजातीय व महिला राज्यपाल हैं या वे राष्ट्रपति हैं या वे कुशल संगठनकर्ता हैं या वे सफल राजनीतिज्ञ हैं बल्कि इसलिए कि वे राष्ट्रपति जैसे सर्वोच्च पद पर आसीन होने के बावजूद कितनी सरल, शान्त, सौम्य व सादगी की प्रतिमूर्ति हैं।

सम्मान व पुरस्कार

दिनांक 30 मार्च, 2019 को भुवनेश्वर ओडिशा के रमादेवी महिला विश्वविद्यालय के पहले दीक्षांत समारोह में श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को डॉक्टरेट की मानद उपाधि (D. Litt.) से विभूषित किया गया। वर्ष 2007 में श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को ओडिशा विधानसभा में 'उत्कृष्ट विधायक' के रुप में सम्मानित करते हुए 'नीलकंठ अवार्ड' प्रदान किया गया। समय-समय पर महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को विभिन्न मंचों पर कई सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हुए। ■

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा स्वाधीनता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्र के नाम दिया हुआ पहला भाषण

- संकलनकर्ता : लक्ष्मीनारायण भाला 'लक्खी दा'

छिहत्तरवें स्वाधीनता दिवस की पूर्व संध्या पर सभी स्वतंत्रता सेनानियों को नमन करते हुए राष्ट्रपति महोदया ने कहा कि देश-विदेश में रहने वाले सभी भारतीयों को मैं हार्दिक बधाई देती हूँ। देशभर में 14 अगस्त के दिन को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस (Partition Horrors Remembrance Day) के रूप में मनाया जा रहा है। इस स्मृति दिवस को मनाने का उद्देश्य सामाजिक सद्भाव, मानव सशक्तीकरण और एकता को बढ़ावा देना है। हमारा संकल्प है कि वर्ष 2047 तक हम अपने स्वाधीनता सेनानियों के सपनों को पूरी तरह साकार कर लेंगे।

राष्ट्रपति ने कहा कि 15 अगस्त 1947 के दिन हमने औपनिवेशिक शासन की बेड़ियों को काट दिया था। उस शुभ-दिवस की वर्षगाँठ मनाते हुए हम लोग सभी स्वाधीनता सेनानियों को सादर नमन करते हैं। उन्होंने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया ताकि हम सब स्वाधीन भारत में सांस ले सके। यह उत्सव का मौका है। 'हर घर तिरंगा' अभियान चल रहा है। आज हमारे देश के कोने-कोने में तिरंगा शान से लहरा रहा है। भारत हर दिन प्रगति कर रहा है।

सभी को समान अधिकार

उन्होंने कहा कि अधिकांश लोकतान्त्रिक देशों में वोट देने का अधिकार प्राप्त करने के लिए महिलाओं को लंबे समय तक संघर्ष करना पड़ा था, लेकिन हमारे गणतंत्र की शुरुआत से ही भारत ने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को अपनाया। हमने 'आजादी का अमृत महोत्सव' मार्च 2021 में दांडी यात्रा की स्मृति को फिर से जीवंत रूप देकर शुरू किया। उस युगांतकारी आंदोलन ने हमारे संघर्ष को विश्व पटल

पर स्थापित किया था। उसे सम्मान देकर हमारे इस महोत्सव की शुरुआत की गई। यह महोत्सव भारत की जनता को समर्पित है। पिछले वर्ष से हर 15 नवंबर को 'जन-जातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाने का सरकार का निर्णय स्वागत-योग्य है। हमारे जनजातीय महानायक केवल स्थानीय या क्षेत्रीय प्रतीक नहीं हैं बल्कि वे पूरे देश के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। देश के प्रत्येक नागरिक से मेरा अनुरोध है कि वे अपने मूल कर्तव्यों के बारे में जानें, उनका पालन करें, जिससे हमारा राष्ट्र नई ऊँचाइयों को छू सके।

कोरोना का किया जिक्र

कोरोना 19 का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि हमने देश में ही निर्मित वैक्सीन के साथ मानव इतिहास का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान शुरू किया। पिछले महीने हमने दो सौ करोड़ वैक्सीन कवरेज का आंकड़ा पार कर लिया है। इस महामारी का सामना करने में हमारी उपलब्धियाँ विश्व के अनेक विकसित देशों से अधिक रही हैं।

जब दुनिया कोरोना महामारी के गंभीर संकट से निर्मित आर्थिक परिणामों से जूझ रही थी तब भारत ने स्वयं को संभाला और अब पुन: तीव्र गति से आगे बढ़ने लगा है। इस समय भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ रही प्रमुख अर्थ-व्यवस्थाओं में से एक है।

देश की उम्मीदें हमारी बेटियाँ

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि आज देश में स्वास्थ्य, शिक्षा और अर्थ-व्यवस्था तथा इनके साथ जुड़े अन्य क्षेत्रों में जो अच्छे बदलाव दिखाई दे रहे हैं उनके मूल में सुशासन पर विशेष बल दिए जाने की प्रमुख भूमिका है। भारत के नए आत्मविश्वास का स्रोत देश के युवा, किसान और सबसे बढ़कर देश की महिलाएँ हैं। महिलाएँ अनेक रूढ़ियों और बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़ रही हैं। सामाजिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं में उनकी बढ़ती भागीदारी निर्णायक साबित होगी। आज हमारी पंचायती राज संस्थाओं में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की संख्या चौदह लाख से कहीं अधिक है। हमारे देश की बहुत सी उम्मीदें हमारी बेटियों पर टिकी हुई हैं। समुचित अवसर मिलने पर वे शानदार सफलता हासिल कर सकती हैं। हमारी बेटियाँ फाइटर पायलट से लेकर स्पेस साइंटिस्ट होने तक हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं।

पर्यावरण का रक्षण

उन्होंने कहा कि आज जब हमारे पर्यावरण के सम्मुख नई-नई चुनौतियां आ रही हैं तब हमें भारत की सुंदरता से जुड़ी हर चीज का दृढ़तापूर्वक संरक्षण करना चाहिए। जल, मिट्टी और जैविक विविधता का संरक्षण हमारी भावी पीढ़ियों के प्रति हमारा कर्तव्य है। हमारे पास जो कुछ भी है वह हमारी मातृभूमि का दिया हुआ है, इसलिए हमें अपने देश की सुरक्षा, प्रगति और समृद्धि के लिए अपना सब कुछ अर्पण कर देने का संकल्प लेना चाहिए।

देशवासियों को शुभकामनाएँ

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि मैं भारत के सशस्त्र बलों, विदेशों में स्थित भारतीय मिशनों और अपनी मातृभूमि को गौरवान्वित करने वाले प्रवासी-भारतीयों को स्वाधीनता दिवस की बधाई देती हूँ। मैं सभी देशवासियों के सुखद और मंगलमय जीवन के लिए शुभकामनाएं व्यक्त करती हूँ। ■

पूर्णत: शाकाहारी है महामहिम राष्ट्रपति महोदया

आप जैसा राष्ट्रपति न कभी हुआ है न कभी होगा। गर्व है आप पर पूरे देश को जो आपने इतना अच्छा निर्णय लिया कि अब से राष्ट्रपति भवन में किसी भी प्रकार का मांसाहार/नॉनवेज दावत या पेय पर पूर्णत: प्रतिबंध रहेगा।

महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी की भोजनशाला पूर्णत: शुद्ध है। वे मांसाहार तो दूर प्याज लहसुन भी नहीं खाती हैं। उनका मानना है कि जब ईश्वर ने आपको भोजन में खाने के लिए इतने अच्छे-अच्छे पदार्थ दिए हैं तो फिर आप मांस खाकर और दूसरे जीवों की हत्या कर अपने पेट को क्यों कब्रिस्तान बनाते हो!

तेलंगाना के भद्राचलम मंदिर
जनजातीय पुजारी सम्मेलन में राष्ट्रपति

भारत की राष्ट्रपति, श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का वनवासी कल्याण परिषद तेलंगाना, द्वारा आयोजित समाख्या सरलम्मा जनजातीय पुजारी सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर संबोधन

भद्राचलम मंदिर के पावन प्रांगण में आयोजित इस समाख्या सरलम्मा जनजातीय पुजारी सम्मेलन में आकर आज मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। राष्ट्रपति के रूप में, तेलंगाना राज्य की मेरी यह पहली यात्रा है। सुप्रसिद्ध तेलुगु कवि, दाशरथि कृष्णम आचार्युलु के शब्दों में 'ष्ना तेलंगाणा कोटि रतनाल वीणाष्' अर्थात् मेरा तेलंगाना करोड़ों रत्नों से जड़ी हुई वीणा की तरह है।

तेलंगाना की अपनी पहली यात्रा में मुझे श्रीशैलम मंदिर में दर्शन करने का, श्री सीतारामचंद्र देवस्थानम में आशीर्वाद लेने का तथा यहाँ समाख्या सरलम्मा जनजातीय पुजारी सम्मेलन में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ है। आज ही मुझे रामप्पा देवालयम के पवित्र परिसर में दर्शन करने का और तीर्थ यात्रियों के लिए विकसित की गयी सुविधाओं का शिलान्यास करने का सुअवसर भी प्राप्त होगा और बाद में सह्याद्रि पर स्थित श्री लक्ष्मी नरसिम्हा स्वामी मंदिर में प्रार्थना करने का अवसर भी मिलेगा। ऐसे पावन अवसरों का मिलना मैं अपना सौभाग्य मानती हूँ। इन देवस्थानों और मंदिरों में मुझे सभी देशवासियों के कल्याण हेतु प्रार्थना करने का शुभ अवसर भी प्राप्त हुआ है।

इन अवसरों को प्रदान करने के लिए मैं तेलंगाना की राज्यपाल तमिलि-सइ सौंदर-राजनजी, मुख्यमंत्री, श्री के. चंद्रशेखर रावजी, केंद्र सरकार में संस्कृति पर्यटन एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री, श्री जी किशन रेड्डी जी, तेलंगाना सरकार की पूरी टीम और राज्य के सभी भाई बहनों को धन्यवाद देती हूँ।

मुझे बताया गया है कि तेलंगाना के प्रसिद्ध मंदिरों में लाखों तीर्थ यात्रियों का आवागमन होता है। केंद्र सरकार की 'प्रसाद' योजना के तहत, तीर्थ स्थलों के विकास कार्यों से जुड़कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। मुझे यह जानकर विशेष प्रसन्नता हुई है कि इन सुविधाओं से वरिष्ठ नागरिकों तथा दिव्यांगजनों को तीर्थ यात्रा में और भी अधिक सुविधा होगी। इन विकास कार्यों से आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा मिलता है। इस प्रकार घरेलू पर्यटन के विकास में तीर्थ स्थलों के पर्यटन का बहुत बड़ा योगदान होता है। ऐसे पर्यटन से लोगों की आजीविका और आय में भी वृद्धि होती है तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी बल मिलता है। इसलिए 'प्रसाद योजना' को उत्साहपूर्वक आगे बढ़ाने के लिए मैं श्री किशन रेड्डी जी और उनकी टीम की विशेष सराहना करती हूँ।

लोक परंपरा के अनुसार श्री सीतारामचन्द्र स्वामीवरी देवस्थानम, भद्राचलम का राम कथा से सम्बंध है। ऐसा कहा जाता है कि प्रभु श्रीराम ने, माता जानकी और लक्ष्मण के साथ वनवास के दौरान कुछ समय इसी क्षेत्र में स्थित एक पर्णशाला में बिताया था। ऐसी

जानकारी का देश के सभी क्षेत्रों में और विदेशों में भी प्रचार-प्रसार करने से लोक रुचि बढ़ती है।

'वनवासी कल्याण परिषद - तेलंगाना' द्वारा इस सम्मेलन के आयोजन के लिए मैं आप सबकी सराहना करती हूँ। मुझे बताया गया है कि यह परिषद वनवासी समाज के समग्र विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। परिषद की मुख्य चिंता है कि सांस्कृतिक परम्पराओं के कमजोर होने पर हमारी मूल पहचान का अंत हो सकता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए, निरंतर अपनी समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और रीति-रिवाजों को जीवंत बनाए रखना अनिवार्य है।

जनजातीय समाज, विशेष रूप से कोया समुदाय के लाखों भाई-बहन समाख्या सरलम्मा की पूजा-अर्चना के लिए एकत्रित होते हैं। यहां के जनजातीय समाज का यह बहुत बड़ा त्योहार है। मेरा मानना है कि ऐसे पर्व और सम्मेलन हमारी सामाजिक समरसता को मजबूत बनाते हैं। यह खुशी की बात है कि परिषद इस दिशा में सराहनीय प्रयास कर रही है। इसके लिए मैं परिषद को बधाई देती हूँ।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि 'वनवासी कल्याण परिषद' द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य-सेवाओं, कौशल-विकास और पंचायत-विकास से जुड़ी जागरूकता के बारे में उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं और परिषद द्वारा अनेक एकल विद्यालय संचालित किए जा रहे हैं। जनजातीय विद्यार्थियों को प्रतिष्ठित विद्यालयों में प्रवेश हेतु प्रयास करने के लिए कई छात्रावास भी संचालित किए जा रहे हैं।

प्रगति के सभी आयामों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी, हमारे समाज और देश के समग्र विकास के लिए ज़रूरी है। यह प्रसन्नता की बात है कि महिलाओं को आर्थिक सशक्तीकरण की दिशा में आगे बढ़ाने के लिए परिषद द्वारा विकास केन्द्र भी चलाए जा रहे हैं।

मुझे बताया गया है कि ग्राम-विकास के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए परिषद द्वारा आदिवासी क्षेत्रों में शिविर आयोजित किए जाते हैं। परिषद, 'एकलव्य क्रीड़ा केन्द्रों' के माध्यम से बच्चों की प्रतिभा को निखार रही है। मैं ऐसे कल्याणकारी कार्यों के लिए परिषद की सराहना करती हूँ।

केन्द्र सरकार की 'एकलव्य मॉडल आवासीय स्कूल' परियोजना के अंतर्गत, जनजातीय बहुल क्षेत्रों में, वंचित और पिछड़े वर्ग के बच्चों को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराने के लिए, 'जनजातीय कार्य मंत्रालय' द्वारा अनेक स्कूलों की स्थापना का कार्य सराहनीय है। मुझे अन्य राज्यों में भी एकलव्य मॉडल स्कूलों के शिलान्यास और उद्घाटन का अवसर मिला है। ये सभी स्कूल भारत की भावी पीढ़ी के निर्माण में अमूल्य योगदान देंगे, यह मेरा दृढ़ विश्वास है। एकलव्य मॉडल स्कूलों की इस दूरदर्शी योजना को आगे बढ़ाते रहने के लिए मैं केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों और इन विद्यालयों से जुड़े सभी लोगों को बधाई देती हूँ। मैं इन स्कूलों में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों के सुखद भविष्य की मंगल कामना करती हूँ।

अंत में तेलंगाना राज्य के सभी निवासियों के स्वर्णिम भविष्य हेतु शुभकामनाएँ व्यक्त करते हुए, मैं अपनी वाणी को विराम देती हूँ।

धन्यवाद,

जय हिन्द! जय भारत!

(प्रतिनिधि) ■

माई लार्ड !
जेल में बंद लोग भी देश के नागरिक हैं

- संकलनकर्ता : राकेश दुबे

भारत की आज़ादी और भारत में आज़ादी को लेकर कभी भी और कहीं भी बहस होती रहती है। आज तक देश में किसी राजनीतिक दल ने उन विचाराधीन कैदियों की बात नहीं की जो जेलों में हैं। देश की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने कुछ दिन पहले संविधान दिवस के अवसर पर बिना जमानत और सुनवाई के लंबे समय से जेलों में बंद विचाराधीन कैदियों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने का भावनात्मक निवेदन किया है। जिस कार्यक्रम में उन्होंने यह मुद्दा उठाया उसमें देश के प्रधान न्यायाधीश समेत सर्वोच्च और उच्च न्यायालयों के न्यायाधीश तथा केंद्रीय कानून मंत्री किरण रिजिजू भी उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि राष्ट्रपति ने अपने अंग्रेजी भाषण से इतर हिंदी में बोलते हुए गरीब कैदियों और उनके परिजनों के कष्ट को रेखांकित किया था तथा उनके लिए कुछ करने का आह्वान किया था।

राष्ट्रपति मुर्मू ने अपने संबोधन में यह भी रेखांकित किया है कि देश की जेलों में क्षमता से कहीं अधिक कैदी हैं। उनकी इस बात में भी दम है कि नये जेल बनाना विकास की निशानी नहीं है, देश के हर राजनीतिक दल को इस पर विचार करना चाहिए। यह बात सर्व ज्ञात है कि अधिकांश अपराध राजनीतिक प्रश्रय की छत्रछाया में होता है। भावावेश में किये गये अपराधों की संख्या का प्रतिशत कम ही होता है।

आज देश की जेलों में 5.54 लाख कैदी हैं, जबकि जेलों की अधिकतम क्षमता 4.26 लाख लोगों के लिए ही है। सब जानते हैं, विचाराधीन कैदी वे होते हैं, जो आपराधिक मामलों में आरोपित होते हैं तथा अदालतों में उनकी सुनवाई हो रही होती है।

देश का सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों के अनेक निर्णयों एवं निर्देशों में कहा जा चुका है कि जमानत देने में अदालतों का रवैया नरम होना चाहिए। हाल ही में पूर्व और वर्तमान प्रधान न्यायाधीश भी ऐसी ही राय व्यक्त कर चुके हैं। इसके बावजूद ऐसा देखने में आता है कि मामूली अपराधों में भी अदालतें जमानत देने में संकोच करती हैं।

राष्ट्रपति मुर्मू की यह बात भी बहुत महत्वपूर्ण है कि कई बार पुलिस द्वारा अभियुक्त के विरुद्ध बहुत सारी ऐसी धाराएं भी लगा दी जाती हैं, जो अपराध उस व्यक्ति ने किया भी नहीं होता।

अनेक रिपोर्ट में यह तथ्य भी रेखांकित हुआ है कि जेलों में कैदियों में बड़ी संख्या अनपढ़, मामूली रूप से शिक्षित और वंचित लोगों की है और इनके परिजन अदालतों का खर्च वहन नहीं कर पाते हैं। कई बार जमानत की साधारण शर्तें नहीं पूरी कर पाने की स्थिति में भी कैदियों को जेल में ही रहना पड़ता है। सरकार से आशा की जाती है कि सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश के बाद जेलों में अकारण या लम्बे समय से विचाराधीन कैदियों की स्थिति में जल्द सुधार होगा। ■

कविता ....

करो प्रणाम स्वीकार

- लक्ष्मीनारायण भाला 'लक्खी दा'

महा महिमा, नारी गरिमा,
द्रौपदी जिनका नाम।
है संथाली जनजाति से,
मुर्मू है उप नाम।।

बनी देश की प्रथम नागरिक,
राष्ट्रपति पद पाया।
पहले भाषण में ही मन का,
राष्ट्रप्रेम झलकाया।।

राष्ट्र प्रथम हो इसी भाव को,
सभी करें चरितार्थ।
कथनी-करनी से समझाया,
इसका भी भावार्थ।।

अपना राष्ट्र बने जग जननी,
वसुधा है परिवार।
राष्ट्रपति का भवन बनेगा,
शुभ वैश्विक दरबार।।

अपनी भाषा-संस्कृति के प्रति,
स्वाभिमान हो मन में।
विभिन्न भाषा-सम्प्रदाय का,
हो सम्मान हृदय में।।

न्याय व्यवस्था सहज-सुलभ हो,
हो जनहितकारी भाव।
शासन और प्रशासन का भी,
ऐसा बने स्वभाव।।

कारागार सुधार-गृह बने,
और नये ना खोलें।
वृद्धाश्रम, अनाथ आश्रम की,
जरूरतों को तोलें।।

हो आदर्श समाज की रचना,
विश्व बने अनुगामी।
जननायक जनसेवक बन कर,
दूर करें बदनामी।।

जन-जन के दर्दों का दुखड़ा,
नि:संकोच बताया।
जो न बोल पाई सो समझे,
यह कहकर चेताया।।

अमृत महोत्सवी अवसर पर,
बनकर खेवनहार।
राष्ट्र-प्रधान द्रौपदी मुर्मू,
करो प्रणाम स्वीकार।।

शिक्षिका से राष्ट्रपति तक का सफर

शपथ देशहित, शिक्षा जनहित, दीक्षा लेकर रहे कार्यरत।
यह संदेश गांव से घर तक, हर चुनौती को करें हताहत।।

११ करोड़ वनवासी समाज के सर्वांगीण विकास एवं धर्म-संस्कृति संरक्षण हेतु
परम पावन पुरुषोत्तम (श्रावण) मास के पुनीत अवसर पर

श्री शिवपुराण कथा

एवं १०८ पाठ का भव्य आयोजन

कथा व्यास

पूज्यपाद आचार्य मृदुलकांत शास्त्री

स्थान :

दी स्टेडल, युवा भारती क्रीड़ांगण, साल्टलेक, कोलकाता - 700098

दिनांक : १८ जुलाई (मंगलवार) से २४ जुलाई (सोमवार)

समय : दोपहर २ से ६ बजे तक

सभी भक्तगण सादर आमंत्रित हैं।

आयोजक :

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता-हावड़ा महानगर

If undelivered please return to :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road

Bangur Building, 2nd Floor

Room No. 51, Kolkata - 700007

Phone : +91 33 2268 0962 / 4803 4533

Email : kalyanashram.kol@gmail.com

Printed Matter

Book-Post